प्रकाशन की तिथि 01.12.2017

ओ३म्

शुद्धि समाचार

एक प्रति मूल्य : रु० 3.50

पं. लेखराम

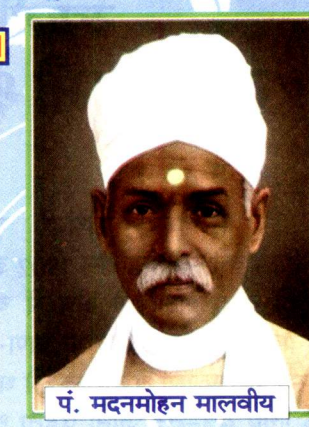
पं. मदनमोहन मालवीय

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

वर्ष 40 अंक 12

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 40 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

दिसम्बर, 2017 विक्रम सम्वत् 2070 मार्गशीर्ष-पौष

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या इसलिए की गई कि शुद्धि कार्य समाप्त हो जाये। स्वामी जी की हत्या का बदला, शुद्धि कार्य जारी रख कर ही लिया जा सकता है।
–सावरकर विचार दर्शन पृ. 14

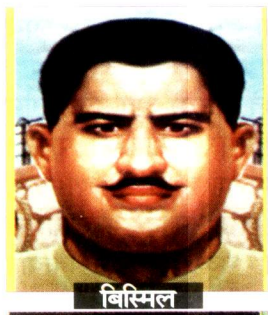
बिस्मिल

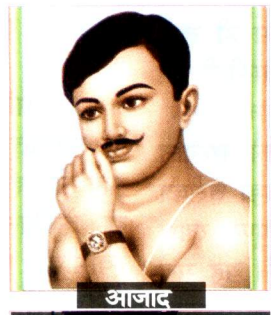
आजाद

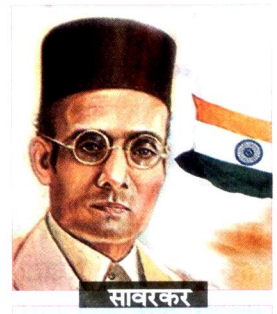
सावरकर

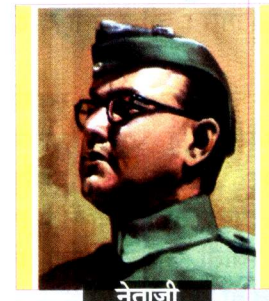
नेताजी

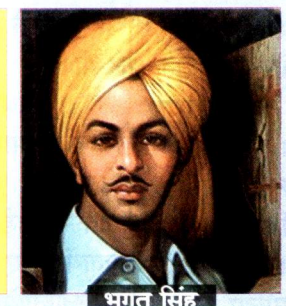
भगत सिंह

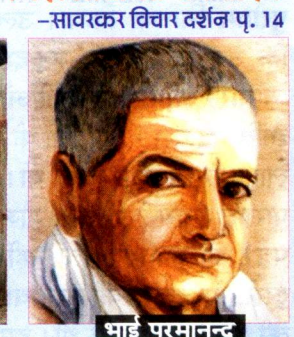
भाई परमानन्द

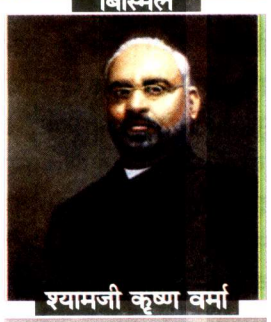
श्यामजी कृष्ण वर्मा

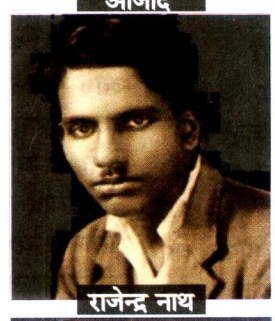
राजेन्द्र नाथ

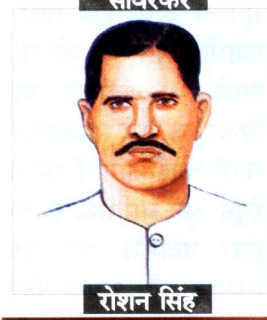
रोशन सिंह

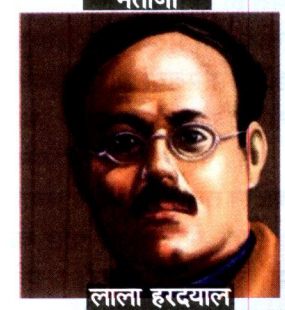
लाला हरदयाल

गोखले

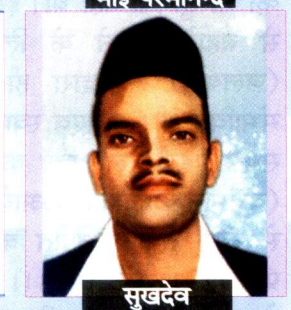
सुखदेव

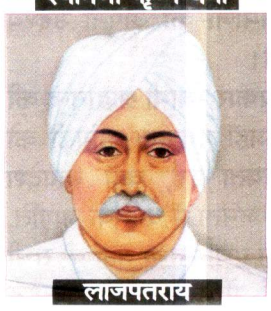
लाजपतराय

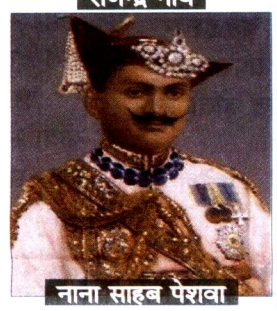
नाना साहब पेशवा

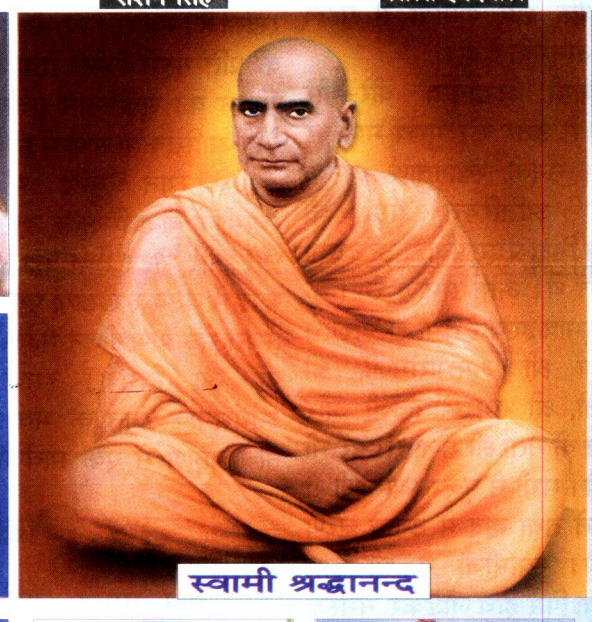
स्वामी श्रद्धानन्द

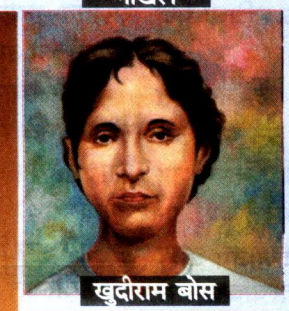
खुदीराम बोस

गणेश शंकर

मदनलाल ढींगरा

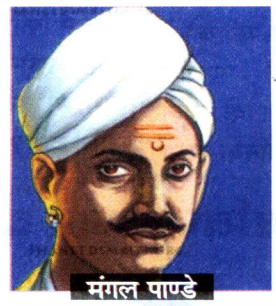
मंगल पाण्डे

हकीकतराय

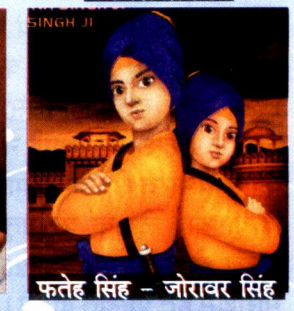
फतेह सिंह – जोरावर सिंह

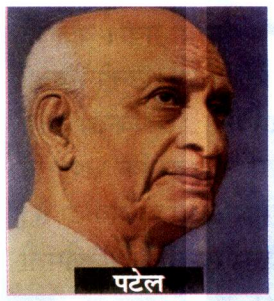
पटेल

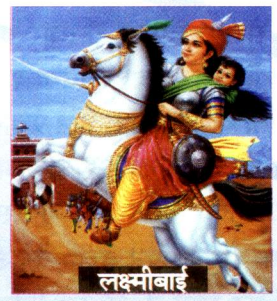
लक्ष्मीबाई

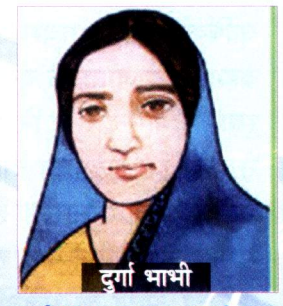
दुर्गा भाभी

तिलक

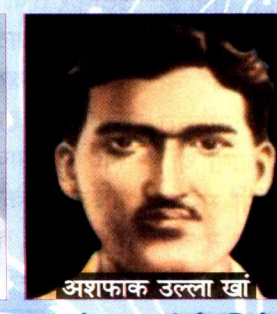
अशफाक उल्ला खां

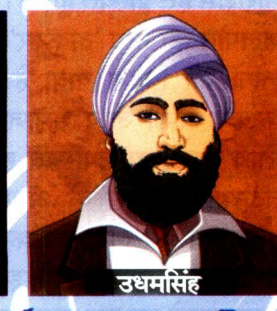
उधमसिंह

राष्ट्रीय प्रार्थना : ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।

किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए, सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए। पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए, निज पूर्व-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए ॥10॥

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर विशेषस्मृति

जब स्वामी श्रद्धानन्द ने माम्यांर (बर्मा) की यात्रा की

प्रस्तोता–श्री मनुदेव 'अभय' विद्या वाचस्पति, एम.ए.

इतिहास प्रसिद्ध गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन् 1902 ई. में हो चुकी थी। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक चुनौती थी। इस संस्था के प्राण–स्वरूप संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द को धन संग्रह के लिए यत्र–तत्र जाना पड़ता था। सन् 1919–20 के मध्य स्वामी श्रद्धानन्द को ब्रह्म–देश (वर्त्तमान म्यांमार) से कुछ धनाढ्य शिक्षा प्रेमियों को रंगून तथा मांडले पधारने का निमंत्रण मिला। तदनुसार स्वामी श्रद्धानन्द अपना समय निकालकर सितम्बर 1902–20 के मध्य स्वामीजी ने रंगून, मांडले जाने का पुरोगम निश्च्ित किया। उल्लेखनीय है कि उन दिनों रंगून, ब्रह्मदेश (वर्त्तमान प्यामांर) की राजधानी थी और भारत की भांति यद देश भी अंग्रेजों के अधीन तथा लाल रंग में रंगा हुआ था। इस कारण पारपत्र (पासपोर्ट) तथा वीजा (अनुमति पत्र) की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। दूसरे, आजकल की तरह वायुयान आदि की भी सुविधा नहीं थी। इसलिए भारत से ब्रह्मदेश जाने के लिए जलपोत (जलयान) के द्वारा ही यह यात्रा संभावित थी। अतएव स्वामी श्रद्धानन्द सबसे पहले रेल यात्रा कर कलकत्ता (वर्त्तमान कोलकाता) आये। कलकत्ता से रंगून तक जलपोत की यात्राा में प्रायः72–73 घंटे (3–3।। दिन) लगते थे। जलपोत–यात्रा अधिक सुविधा पूर्ण थी।

स्वामी श्रद्धानन्द के जलपोत का नाम 'आरांकोला' था। इन पंक्तियों के लेखक को जलपोत यात्रा करने का सुखद अनुभव यह लेख लिखते याद आ रहा है। तत्कालीन सार्वदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के तत्वावधान में सन् 1973 में अष्टम आर्य महासम्मेलन मॉरिशस (लधु भारत) का आयोजन किया था। तत्कालीन सभा मंत्री पं. ओ३म् प्रकाश जी त्यागी ने इस लेखक को मध्यभारत क्षेत्र का संयोजक नियुक्त किया था। लेखक के नेतृत्व में मध्य भारत क्षेत्र से प्रायः 25–26 आर्य गामी मॉरीशस हेतु प्रस्थित हुए थे। इस यात्रा के जलपोत का नाम 'अकबर' था और हम लोगों को विदेश यात्रा हेतु मुम्बई के कांकड़ वाड़ी आर्य समाज में निश्चित तिथि तक वहां उपस्थित हो जाना था। तदनुसार ही देश के आर्यगामी मुम्बई पहुँच गये थे। लेख का कलेवर न बढ़े तथा विषयान्तर भी न हो, इस मर्यादा का ध्यान रखते हुए हम कलकत्ता बन्दरगाह पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

जिन लोगों ने जलपोत से यात्रा की है, 'सी सिकनेस' अर्थात जलपोत के चलते ही यात्रियों का पित्त हिलने लगता है, इस कारण मिचलाहट आने लगती है और उल्टियाँ आदि होने लगती हैं, परंतु इस प्रारम्भिक कष्ट से घबराना नहीं चाहिए। 2–4 घंटों में सब सामान्य हो जाता है। जलपोत यात्रा के समय दिन में नीला पानी और रात्रि को धवल–चन्द्र ही साथ रहते हैं। ऐसे में ही परमात्मा की रचना, महिमा, शक्ति तथा उसका अस्तित्व अनुभव होता है। 'आरांकोला' जलपोत अपने 1000–1200 यात्रियों में पूज्य स्वामी जी को ले जा रहा था। इधर रंगूर बन्दरगाह की लुइस स्ट्रीटजेट्टी पर स्वामीजी के आगमन की सूचना दे दी गई थी।

भाव–भीना स्वागत– स्वामी जी के आगमन की खबर पाकर बन्दरगाह पर जनता की भीड़ पलक–पांवड़े बिछा, तथा हाथों में फूल मालायें लिए स्वाती जी के दर्शनों के लिए लालायित हो रही थी। उस भीड़ में अनेकों भारतीय स्त्री पुरुष बौद्ध साधु(फोजी, सयाडों) बर्मी स्त्रयां भी उपस्थिति थे। स्वामी जी का जलपोत प्रातः 7 बजे 'लुइसस्ट्रीट' जा पहुँचा। उस समय आकाश में बादल तथा मन्द–मन्द बयार बह रही थी। वहाँ पहुँचते ही पोत के अधिकारियों ने स्वामीजी को सम्मान–पूर्वक शेष–यात्रियों से पहले उतरने की अनुमति दे दी।

स्वामी श्रद्धानन्द धीरे–धीरे सीढ़ी गेंगवे से उत्तर कर मुख्य मार्ग पर आ पहुँचे। उनके स्वागतार्थ अनेक लोगों के अतिरिक्त बर्मा के स्वनामधन्य भिक्षु प्रवर सयाडौ ऊ उत्तमा भी उपस्थित थे। आर्य समाज रंगून के प्रधान श्री सुभाष हल्कर तथा डा. गुरुदत्त सरीन तथा श्री आत्मारामजी, श्री दरियामलजीं, श्री रामरखामलजी और हिन्दू समाज के नेता श्री राजा रेडियर भी आये हुए थे। सभी ने पूज्य स्वामीजी से प्रथम नमस्ते तथा बाद में उनके चरण स्पर्श किये। स्वामीजी ने भी हाथ उठाकर तथा फिर हाथ जोड़कर 'नमस्ते' द्वारा अभिवादन स्वीकार किया।

स्त्रियों द्वारा केश फैला कर स्वागत– जहाज से जेट्टी की मुख्य सड़क कोई 100 गज ही दूर थी। वहीं अनेक गाड़ियाँ पार्किंग में थीं। स्वामीजी जैसे ही कुछ आगे बढ़ते हैं, वैसे ही एक दृश देखकर अंचभित हो जोते हैं।

उनके जाने के मुख्य पथ के दोनों ओर बर्मी महिलायें बैठीं हैं और सामने पथ पर झुकी हुई हैं। उन सबका माथा भूमि से लगा है और उनके खुले केश बाहर सामने ही पृथ्वी पर फैले हैं। दोनों ओर की महिलाओं ने उस पथ पर अपनी केश–राशि फैलाकर पथ को पूरा ढक दिया है। एक भारतीय आर्य संन्यासी जो मातृ–शक्ति का सदा सम्मान करता आया है, तथा माता भूमिः पुत्रो अहम् पृथिवीः इस अथर्ववेद की ऋचा को मानने वाला हो, उसके मार्ग में यह सारा अजीबोगरीब दृश्य! स्वामीजी पहिले तो बहुत सकुचे परन्तु आगे न बढ़ सके। महिलाओं के सिर के बालों की श्याम–चादर पर कैसे पैर रखें मन में ऊहा–पोह होने लगी। पास ही खड़े बौद्ध भिक्षु उत्तमाजी ने स्वामीजी को समझाया कि यह बर्मी स्त्रियों द्वारा किसी महत्तम सन्यासी को सम्मान प्रदर्शन करने का सबसे बड़ा तरीका है। और इसके द्वारा वे पुण्य लाभ करने की आशा रखती हैं। यह सब सुनकर और कुछ सोचने के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द जी ने धीरे– धीरे लम्बे पग बढ़ाकर चलना आरम्भ किया। वे ऐसी सावधानी से चल रहे थे मानों कोई अंगारों पर चल रहा हो। रंगून के बर्मीसमाज तथा गृहस्थियों द्वारा प्रदर्शित यह उच्चकोटि का सम्मान भी अपना विशिष्ट महत्व रखता है। यह सब स्वामीजी की ईश्वर के प्रति गहरी निष्ठा तथा तपस्यापूर्ण जीवन का सुपरिणाम प्रतीत होता है ऐसी आस्तिकता सभी में हो।

रंगून नगर में प्रवेश– स्वामीजी बौद्ध भिक्षु ऊ उत्तमा के साथ धीरे–धीरे मोटर तक आये तत्पश्चात् कार में बैठकर खेडोगों पगोड़ा रोड पर स्थित सेठ प्राणजीवन मेहता की कोठी पर आ विराजे। इसके पश्चात् आर्यसमाज रंगून के भवन के खुले नीचे प्रांगण में एक सार्वजनिक सभा हुई। सांयकाल का समय था। आर्यसमाज में इस समय उपस्थिति भी बहुत अच्छी हो गई थी। आर्य समाज की परम्परा के अनुसार वर्मा के दानवीर राजा बैजनाथ सिंह की अध्यक्षता में सभा प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम स्वामीती ने अपने उपदेश द्वारा अमृत वर्षा की। इसके प्रारम्भ में स्वामीजी और गुरुकुल कांगड़ी के संबंध में प्रकाश डाला जा चुका था।

धन वर्षा– स्वामीजी के प्रभावोत्पादक उपदेश के पश्चात् धन की अभ्यर्थना (अपील) की गई। सर्वप्रथम सभा–अध्यक्ष दानवीर राणा बैजनाथ सिंह ने इस सभा में हाथ जोड़कर 5 हजार रु. की राशि प्रदान की। एक तेलगू धर्म निष्ठ धनाढ्य ने सम्मानपूर्वक साष्टांग दण्डवत् प्रणाम कर एक लिफाफा पूज्य स्वामीजी के चरणों में रखा–इसमें दस हजार रुपये थे।

मांडले नगर में आगमन– रंगून के पश्चात् स्वामीजी मांण्डले पधारे। यहाँ सेठ ईश्वर दास, डा. गणेश दास, डा. देवीचन्द शर्मा आदि व्यक्तियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। मांडले स्थित डी.ए.वी स्कूल जाकर छात्रों को संबोधित किया। स्कूल छात्र ओ३म् प्रकाश ने एक सहपाठी के साथ एक संवाद सुनाया और स्वामीजी ने दोनों छात्रों के सिरों पर हाथ फेर आशीर्वाद प्रदान किया। यहाँ अनेक धर्मनिष्ठ संभ्रान्त नागरिकों ने स्वामीजी को गुरुकुल की सहायतार्थ धन–राशि भेंट की। स्वामीजी को अपना उद्देश्य पूर्ण होते दिखा।

इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द की इस यात्रा से जहाँ गुरुकुल कांगड़ी को आर्थिक सहायता हुई, वहाँ ब्रह्मदेश (म्यांमार) की जनता में धार्मिक जागृति, वैदिक धर्म का प्रचार तथा वहां के सभी आर्य–हिन्दुओं में प्रबल और अटूट संगठन की भावनाओ को बल प्राप्त हुआ। पुरानी पीढ़ी के बर्मी लोगों को अभी भी स्वामीती द्वारा रंगून यात्रा की स्मृति बनी हुई है।

राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द

आर्य समाज (एडी ब्लाक) टैगोर गार्डन नई दिल्ली का 54वाँ वार्षिकोत्सव 16 नवम्बर से 19 नवम्बर रविवार तक मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य जगत के युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी थे। उन्होंने कहा स्वामी दयानन्द राष्ट्र निर्माता थे वेदों का उन्होंने प्रचार किया । श्री विनय आर्य ने कहा कि सुख का आधार क्या। डा. अनिल आर्य ने कहा कि राष्ट्र के सामने बहुत ही समस्या है इनका निराकरण आर्य समाज द्वारा हो सकता है। सुभाष आर्य जी ने कहा हम सभी अपने बच्चों को उत्तम संस्कार दे । श्रीमती कविता आर्या के भजनों का सभी ने आनन्द लिया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

–अशोक आर्य प्रधान

आर्य समाज, टैगार गार्डन, नई दिल्ली

सम्पादकीय दिव्य पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

वह दिन भारतीय सांस्कृतिक जागरण के इतिहास में सदैव याद किया जाएगा जिस दिन महर्षि दयानन्द के प्रथम दर्शन और सत्संग का लाभ महत्मा मुंशीराम जी को मिला। स्वामी दयानन्द की अपूर्व तार्किक युक्तियों ने मुंशीराम जी की संदेह और अनास्था की शिला को चूर-चूर कर दिया था पर परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना उनके लिए दूभर हो उठा था। मुंशीराम जी ने निवेदन किया महाराज आपकी तर्कणा शक्ति बड़ी प्रबल है आपने मुझे चुप तो करा दिया परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।

स्वामी जी पहले हंसे फिर गम्भीर स्वर में बोले। देखो! तुमने प्रश्न किए। मैंने उत्तर दिए मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा। तुम्हारा प्रभु पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देगें। मुंशीराम जी को उन्होंने कहा श्रद्धा की वेदी पर विश्वास का दीपक जलाओ। परमेश्वर का साक्षात्कार होगा। मुंशीराम जी की इस मानसी दीक्षा ने उन्हें श्रद्धानन्द बना दिया। तब से लेकर बलिदान होने तक उन्होंने श्रद्धा की अंगुली कभी नहीं छोड़ी। स्वामी जी देह और मन से सच्चे आर्य पुरुष थे। वैदिक युग को मूर्त रूप देने के लिए गुरुकुल की स्थापना पर एक बार उन्होंने वेद मंत्र में पढ़ा कि मनुष्य पर्वतों के निकट नदियों के सङ्गम पर ध्यान करने में परम मेधावी बनता है।

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत।। यजु.26.157।

इस मंत्र पर चिंतन-मनन करते-करते उस धुन के धनी में बालकों के लिए ऐसे ही वेदोक्त स्थान में गुरुकुल खोलने की योजना का श्री गणेश हुआ। तत्पश्चात् उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। इसी गुरुकुल के माध्यम से उन्होंने देश को मेधावी, चरित्रवान् बलवान और देश भक्त युवा सेनानी प्रदान किए। गुरुकुल की थोड़े ही दिनों में इतनी धूम मच गई कि प्रायः सभी वर्गों के लोग उसे तीर्थ स्थान समझकर वहां जाने लगे। इधर सरकार इस को अपने विरुद्ध एक भारी षड्यन्त्र समझकर इस पर तिरछी नजर रखने लगी और इसके विरुद्ध गलत रिपोर्ट सरकारी दफ्तरों में जाने लगी। समय-समय पर बड़े-बड़े सरकारी अधिकारी गण वहां जांच करने लगे परन्तु वहां के अनुशासन शान्तिमय वातावरण और ब्रह्मचारियों के सादा रहन-सहन को देखकर बड़े प्रभावित हो जाते थे। उत्तर प्रदेश के लैफ्टिनेण्ट गवर्नर वहां प्रायः जाया करते थे। एक बार लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन वहां गये तो वहां स्वच्छ, सुन्दर वायु मण्डल और वातावरण को देखकर दंग रह गये और यह कहने को विवश हो गये कि न केवल इस प्रान्त (उ.प्र.) में किन्तु समस्त भारत में गुरुकुल एक बिलकुल मौलिक और कुतूहलपूर्ण परीक्षण है। यहां के कर्मचारियों के त्याग तथा सेवा की भावना, प्रबन्ध तथा शिक्षा की व्यवस्था और ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा था-

एक आदर्श विश्व विद्यालय के लिए मेरा आदर्श गुरुकुल है। यही नहीं जब इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री मि. रैम्जे मेकडानल्ड सन् 1914 में गुरुकुल देखने गये तो वहाँ के वातावरण और स्वामी श्रद्धानन्द के भव्य आकार को देखकर बड़े ही सुन्दर शब्दों में उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि वर्तमान का कोई कलाकार यदि भगवान ईसा की मूर्ति घड़ने के लिए कोई जीवित माडल सम्मुख रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति (स्वामी श्रद्धानन्द) की ओर इशारा करुंगा और यदि कोई मध्य कालीन चित्रकार सेंट पीटर के लिए कोई नमूना चाहेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करुंगा।

स्वतंत्रता-आंदोलन में योगदानः

देश के स्वाधीनता आंदोलन में वे सदैव अग्रणी रहे दिल्ली के चाँदनी चौक में विशाल जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन्होंने गोरखों की संगीनों के आगे छाती तान कर अपने अदम्य साहस एवं अपूर्व निर्भयता का परिचय दिया। यह घटना इतिहास के पन्नों को हमेशा के लिए उज्ज्वलाक्षरों द्वारा प्रदीप्त करती रहेगी।

जामा-मस्जिद के मिम्बर से गर्जनाः

4 अप्रैल 1919 के दिन उनका भाषण जामा मस्जिद से करवाया गया जिसे लाखों मुसलमानों ने सुना। संसार के इतिहास में यह पहला अवसर था। जबकि एक गैर-मुस्लिम को मस्जिद की वेदी से उपदेश देने की अनुमति दी गई।

शुद्धि और दलितोद्धारः

जेल से छूटने पर स्वामी जी को मालाबार, सहारनपुर, अमृतसर आदि स्थानों पर मुसलमानों द्वारा हिन्दूओं पर किए गए भीषण अत्याचारों का समाचार मिला। स्वामी जी ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए तत्काल शुद्धि तथा संगठन का व्यापक आन्दोलन छेड़ दिया इस आन्दोलन को प्रगति देने के लिए उन्होंने भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा तथा दलितोद्धार सभा की स्थापना की तथा 'तेज' नाम से उर्दू का दैनिक पत्र निकाला। इसी आन्दोलन के कारण एक मतान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने उन्हें 23 दिसम्बर 1926 को गोली मार दी।

श्रद्धानन्द महान

ऋषिवर के पीछे हुए, श्रद्धानन्द महान।
युगों-युगों तक कर रहा, जग उनका गुणगान ॥१॥
जीवन में जो कुछ किया, श्रद्धा उसका मूल।
उत्तरार्द्ध उत्कर्ष कर, की न पुनः कुछ भूल ॥२॥
सेवा-व्रत जो है कठिन, ले उनका संकल्प।
जीवन-भर उस पर चले, सोचा नहीं विकल्प ॥३॥
दलितों का उद्धार कर, दिया उन्हें नव प्राण।
भटके जन को शुद्ध कर, विधावाओं का त्राण॥४॥

धार्मान्तर जो कर गये, उन्हें बनाया आर्य।
जीवन का यह था मिशन, सारा जग हो आर्य॥५॥
गुरुकुल शिक्षा के लिए, किया सभी कुछ दान।
निर्भय वेद-प्रचार कर, किया आत्म-बलिदान ॥६॥
पद छोड़े क्षण नहीं लगा, मारी उनको लात।
हिन्दी-हिन्दू के लिए, किया समर्पित गात ॥७॥
नारी शिक्षा के लिए, किये प्रयत्न हज़ार।
मात सुमाता बन सके, वेद पढ़े सुविचार ॥८॥

जामा मस्जिद से किया, मंत्रों का उच्चार।
वेद-ज्ञान सब के लिए, भेद-भाव बेकार॥९॥
दान-वृत्ति भी थी प्रबल, लोभ न मन अभिमान।
वेद-विहित जीवन जिया, श्रद्धानन्द महान॥१०॥
जीवन का उद्धार कर, श्रद्धानन्द समान।
सत्संगति पारस मिले, जीवन बने महान ॥११॥

-प्रो. सुन्दरलाल कथूरिया, डी. लिट्.
जनकपुरी, नई दिल्ली

आर्य सपूत

श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल'

लेखकः शहीदे - आज़म भगत सिंह

श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' बड़े होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुन्दर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा होते तो सेनाध्यक्ष बनते। आपको पूरे षड्यन्त्र का नेता माना गया है। चाहे बहुत ज्यादा पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पण्डित जगतनारायण जैसे सरकारी वकील की सुध-बुध भुला देते थे। चीफ कोर्ट में अपनी अपील खुद ही लिखी थी, जिससे कि जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरूर ही किसी बहुत बुद्धिमान् व योग्य व्यक्ति का हाथ है।

19 तारीख की शाम को आपको फांसी दी गयी। 12 की शाम को जब आपको दूध दिया गया तो आपने यह कहकर इन्कार कर दिया कि ज़ब मै मां का दूध ही पीऊंगा। 17 को आपकी मुलाकात हुई। मां को मिलते समय आपकी आंखों से अश्रु बह चले। मां बहुत हिम्मत वाली देवी थी। आपसे कहने लगी-हरीशचन्द्र, दधीचि आदि बुजुर्गों की तरह वीरता, धर्म व देश के लिए जान दे, चिन्ता करने और पछताने की जरूरत नहीं। आप हंस पड़े। कहा, 'मां! मुझे क्या चिन्ता और क्या पछतावा, मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं मौत से नहीं डरता। लेकिन मां! आग के पास रखा घी पिघल ही जाता है। तेरा-मेरा सम्बन्ध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आंखों में अश्रु उमड़ पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूँ। फांसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहा, 'वन्दे मातरम्' 'भारत माता की जय' और शान्ति से चलते हुए कहा-

'मालिक तेरी रजा रहे
और तू ही तू रहे
बाकी न मैं न रहूं,
न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान
रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्रे यार,
तेरी जुस्तजू रहे।

फांसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहा-

I Wish the downfall of **(मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूं।)**

फिर यह शेर पढ़ा-

'अब न अहले वलवले हैं
और न अरमानों की भीड़!
एक मिट जाने की हसरत,
अब दिले - बिस्मिल में है

फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मन्त्र पढ़ना शुरू किया। रस्सी खींची गयी। रामप्रसाद जी फांसी पर लटक गये। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम ख्याल यह है कि उसका कसूर यही था कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। आपको मैनपुरी षड्यन्त्र के नेता श्री गेंदालाल दीक्षित-जैसे शूरवीर ने विशेष तौर पर शिक्षा देकर तैयार किया था। मैनपुरी के मुकदमे के समय आप भागकर नेपाल चले गये थे। अब वही शिक्षा आपकी मृत्यु का एक बड़ा कारण हो गयी। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला। स्वदेश-प्रेम में आपकी माता ने कहा-

''मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूं, दुःखी नहीं। मैं श्री रामचन्द्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोलो श्री रामचन्द्र की जय!''

इत्र-फुलेल और फूलों की वर्षा के बीच उनकी लाश का जुलूस जा रहा था। दुकानदारों ने उनके ऊपर से पैसे फेंके । 11 बजे आपकी लाश श्मशान भूमि में पहूंची और अन्तिम क्रिया समाप्त हुई।

आपके पत्र का आखिरी हिस्सा आपकी सेवा में प्रस्तुत है-

"मैं खूब सुखी हूं। 19 तारीख को प्रातः जो होना है उसके लिए तैयार हूं। परमात्मा काफी शक्ति देंगे। मेरा विश्वास है कि मैं लोगों की सेवा के लिए फिर जल्द ही जन्म लूंगा। सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पण्डित जगत्नारायण (सरकारी वकील जिसने इन्हें फांसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था) को अन्तिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रुपयों से चैन की नींद आये। बुढ़ापे में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।"

रामप्रसाद जी की सारी हसरतें दिल ही दिल में रह गयीं। फांसी से दो दिन पहले से सी.आई. डी. के मि. हैमिल्टन आप लोगों की मिन्नतें कहते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो, आपको पांच हजार रुपया नकद दे दिया जायेगा और सरकारी खर्चे पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जायेगी। लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करते थे। आप हकूमतों को ठुकराने वाले व कभी-कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे। मुकदमे के दिनों आपसे जज ने पूछा था, "आपके पास क्या डिग्री है?" तो आपने हंसकर जवाब दिया था, " सम्राट् बनाने वालों को डिग्री की कोई जरूरत नहीं होती, क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी।" आज वह हमारे बीच नहीं नहीं । आह!!

हम और पर्यावरण

जीवन और पर्यावरण का आपस में घनिष्ठ संबंध है। समस्त जीवधारियों का जीवन उनके पर्यावरण की ही उपज है। पर्यावरण हमारा रक्षा-कवच है, जो प्रकृति से हमें विरासत में मिला है। यह भूमि, वन, झरने, मैदान, जंगल, रंग-बिरंगे फूल, पशु-पक्षी, स्वच्छ जल, बहती हुई शीतल वायु तथा उमड़ते और अमृतधार बरसाते बादल- ये सभी धरती पर बसने वाले मनुष्यों के विकास व सुख-समृद्धि के लिए संतुलित पर्यावरण का निर्माण करते हैं, किंतु पर्यावरण का यह प्राकृतिक संतुलन बड़ी तेजी से बिगड़ता जा रहा है। आश्चर्य होता है कि मनुष्य धरती के इन स्रोतों का कितना अंधाधुंध दोहन करता जा रहा है। वह इसके वरदानों का अविवेकपूर्ण दुरुपयोग कर रहा है। निश्चय ही पर्यावरण को विकृत और दूषित करने वाली समस्त विपदाएं हमारी ही लाई हुई हैं। पर्यावरण प्रदूषण के निम्न कारण हैं :-

1. बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भोजन, वस्त्र और आवास की समस्याएं हैं जिनकी पूर्ति के लिए धरती के संचित संसाधनों को अधाधुंध बेरहमी से निचोड़ा जा रहा है। बड़े पैमाने पर वन व जंगल काटे जा रहे हैं। नदियों के स्वाभाविक प्रवाहों को मोड़ कर बाँध बनाए जा रहे हैं। दूसरी ओर रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव से भूमि को दूषित और विषैली बना दिया गया है जिसके परिणाम स्वरूप स्वच्छ, शुद्ध अनाज, फल और, सब्जियाँ दुर्लभ हो गई हैं। वैज्ञानिक अविष्कारों और बढ़ते हुए औद्योगीकरण के फलस्वरूप प्राणवायु सर्वाधिक दूषित और विषैली हो चली है। यातायात के साधनों से भी धुँआ निकलने से वातावरण प्रदूषित हो रहा है।

निष्कर्ष रूप में कुछ उपायों से प्रदूषण को समाप्त किया जा सकता है :-

1. अपने आस-पास अधिकाधिक वृक्ष लगाएं और उनका संरक्षण करें।

2. वृक्षों का तुरंत काटना रोका जाए क्योंकि - धरती का आधार पेड़ हैं। धरती का श्रृंगार पेड़ हैं।

3. आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने पर विशेष ध्यान दिया जाए। गंदगी दूर करने के सभी उपाय बरते जाएं। पोलिथिन बैग्स के प्रयोग पर रोक लगाई जाए।

4. नदियों-नालों के जल में गंदगी न मिलाने दी जाए।

5. वाहनों को प्रदूषण मुक्त रखा जाए व नियमित समय पर उनकी प्रदूषण-जाँच कराई जाए।

6. कल-कारखानों को आबादी से दूर स्थापित किया जाए। धुएँ पर रोक लगाई जाए। उनकी चिमनियाँ ऊची हों।

7. ध्वनि-प्रदूषण पर नियंत्रण के सभी आवश्यक उपाय किए जाएं।

8. खेती में जैविक खादों (गोबर) का प्रयोग किया जाए।

9. बच्चों के मोबाइल प्रयोग व अधिक टी.वी. और कम्प्यूटर प्रयोग पर रोक लगाई जाए। कान में लगाकर सुनने से ध्वनि प्रदूषण के कारण उनकी श्रवण क्षमता पर प्रभाव पड़ता है।

-सुरेश चुघ
आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

सरदार वल्लभ भाई पटेल

–सेवाराम आर्य
आर्य समाज नजफगढ़,
नई दिल्ली

गुजरात के करमसद गाँव में जन्मा वल्लभभाई पटेल,
माता थी लाड़बाई उनकी और पिता झबेर भाई पटेल।
सबसे बड़े भाई सोभा भाई और उनसे छोटे नरसिंह भाई,
फिर विट्ठल भाई, चारों भाइयों में सबसे छोटे थे वल्लभ भाई।

मैट्रिक के बाद इंग्लैण्ड में रहकर की उन्होंने वकालत पास,
अट्ठारह वर्ष की आयु में झबेरबा मिली अर्द्धांगिनी खास।
मणिबेन थी उनकी पुत्री और डाया भाई हुए उनके पुत्र,
चौंतीस वर्ष के थे वल्लभ भाई पटेल, जब हुए विधुर।।

देश सेवा का बीड़ा उठाया, राजनीति में कदम बढ़ाया,
महात्मा गांधी का मिला संग, कांग्रेस को अपनाया।
गुजरात से किया संघर्ष शुरू, अंग्रेजों के खिलाफ,
राष्ट्र की राजनीति में किया प्रवेश, दास्ता के खिलाफ।।

देश को आजाद कराने के लिये जेल यातना सहनी पड़ी,
असहयोग आंदोलन किये, वकालत भी छोड़नी पड़ी।
कई बार बने कांग्रेस अध्यक्ष, राजनीति में मान पाया,
अंग्रेजों की दमनकारी नीति से नहीं वह घबराया।।

हिंसा के था विरोध में, सुभाष क्रान्ति को न अपनाया,
अहिंसा से ली आजादी, अंग्रेजों को यहाँ से भगाया।
रियासतों को मिला भारत में अनूठा काम कर दिखाया,
नेहरू की ढुलमुल नीति ने कश्मीर मामला उलझाया।।

सरदार पटेल धीर था, वीर था और सच्चा देशभक्त था,
वाणी में जोश था, रगों में उसकी वह रहा पूर्वजों का रक्त था।
दुर्भाग्य है देश का, उसे प्रथम प्रधान मंत्री नहीं बनाया,
गृहमंत्री होते हुए भी उसने भारत को विशाल बनाया।।

पन्द्रह दिसम्बर सन् उन्नीस सौ पचास की अशुभ घड़ी,
सरदार पटेल चल बसा, देश पर आई मुसीबत बड़ी।
इतिहास में नाम अमर हो गया, भारत भाल ऊँचा कर गया,
सेवाराम वह पटेल ही था, जो जिन्ना को सबक सिखा गया।।

पिता का पत्र–पुत्र के नाम

चि. बसन्त,

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना। अपने अनुभव की बात करता हूँ। संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है। यह सच बात है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, अच्छे साधन हैं। उनका सेवा के लिये उपयोग किया तब तो साधन सफल है। अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इतनी बातों का ध्यान रखना:–

1. धन का मौज–शौक में कभी उपयोग न करना। रावण ने मौज–शौक की थी, जनक ने सेवा की थी। धन सदा रहेगा भी नहीं इसलिए जितने दिन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिए करो। अपने ऊपर कम से कम खर्च करो। बाकी दुखियों का दुःख दूर करने में व्यय करो।
2. धन शक्ति है। इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना सम्भव है इसका ध्यान रखो।
3. अपनी संतान के लिए यही उपदेश छोड़कर जाओ यदि बच्चे ऐश आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी न देना। उनके हाथ में जाये उससे पहले ही गरीबों में बाँट देना। क्योंकि तुम यह समझना कि तुम न्यासी हो और हम भाइयों ने व्यापार को बढ़ाया है तो यह समझकर कि तुम लोग धन का सदुपयोग करोगे।
4. सदा यह ख्याल रखना कि तुम्हारा यह धन जनता की धरोहर है। तुम उसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते।
5. भगवान् को कभी न भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है।
6. इन्द्रियों पर काबू रखना वरना यह तुमको डुबा देंगी।
7. नित्य नियम है व्यायाम करना।
8. भोजन को दवा समझकर खाना। जो स्वाद के वश में होकर खाते हैं वे जल्दी मर जाते हैं और न काम कर पाते हैं।

–घनश्यामदास बिरला
(प्रेषक : देवराज आर्य मित्र)

गुरुकुल कांगड़ी में तीन दिन

– मुन्शी प्रेमचन्द संस्म./'माधुरी', अप्रैल, 1928 में प्रका.

पिछले आषाढ़ में गुरुकुल कांगड़ी की साहित्य–परिषद् के निमन्त्रण पर मुझे वहां के दर्शनों को अवसर मिला। स्टेशन पर दो ब्रह्मचारियों ने स्वागत किया और तांगे से कनखन आ पहुंचे। गंगा–घाट पर आकर तमेड़े पर बैठे और गंगा पार की। गुरुकुल की पक्की धर्मशाला में पं. पदमसिंह शर्मा के साथ ठहराया गया। ब्रह्मचारियों की सरल–हृदयता और सेवाशीलता देखकर आनन्द आ गया। ऐसे युवक अंग्रेजी कालेजों में बहुत कम हैं। यह विद्यालय किसी ऋषि का आश्रम मालूम होता था।

सन्ध्या समय साहित्य–परिषद् का उत्सव हुआ। ब्रह्मचारियों ने साहित्यिक रचनाएं सुनायीं। यहां धार्मिक संकीर्णता कहीं दिखायी न दी और ब्रह्मचारियों में विचार–स्वातन्त्र विद्यमान था। दूसरे दिन प्रीति–भोज था। सभी ने फर्श पर बैठकर थालियों में भोजन किया। सन्ध्या को कवि–सम्मेलन हुआ। अधिकांश कविताएं हास्यास्पद थीं, मगर ब्रह्मचारियों ने साहस और निस्संकोच से उनका पाठ किया। तीसरे दिन मुख्याधिष्ठाता रामदेव जी के यहां भोजन किया। ब्रह्मचारियों की उन पर असीम श्रद्धा है। वे सरल जीवन और उच्च विचार के आदर्श के प्रतिरूप हैं।

गुरुकुल ने थोड़े ही वर्षों में राष्ट्र के जितने सेवक पैदा किये हैं, उतने किसी और विद्यालय ने नहीं किये। डिग्रियां लेकर सरकारी पद प्राप्त करना राष्ट्रीय सेवा नहीं है। गुरुकुल से निकले स्नातकों के सांसारिक जीवन को देखकर उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में उठी सभी शंकाएं निर्मूल हो गयी हैं। इन स्नातकों को अंग्रेजी–भाषा का भी अच्छा ज्ञान है। यहां की प्राकृतिक शोभा का तो कहना ही क्या। बलवान् चरित्र ऐसी ही जलवायु में विकसित होते हैं।

देवता स्वरूप भाई परमानंद

–इन्द्र देव, सदस्य आर्य समाज चौक बाजार, बलंदशहर
संस्थापक (1) हिन्दू महासभा बुलन्दशहर

भाई परमानन्द क्रान्तिकारी भाई मतिदास–भाईदयाले और भाई सतीदास के पवित्र वंश में उत्पन्न हुए थे जिन्होंने 17वीं शताब्दी में औरंगजेब द्वारा दिए गए भयंकर कष्ट सहते हुए शहीद तो हो गए किन्तु हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। यदि भाई जी को हिन्दुत्व की प्रतिमूर्ति कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। गुणा कर्म स्वभाव के आधार पर आपको देवता स्वरूप की उपाधि दी गई। 1606 में आपने अफ्रीका के कई देशों में जाकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का डटकर प्रचार किया।

आपने हिन्दुओं में राष्ट्रीय व धार्मिक भावनाएँ जागृत करने के लिए देश के अनेक नगरों का दौरा किया। उनके ओजस्वी भाषणों ने हिन्दुओं में जागृति उत्पन्न की। उनका औषधि निर्माण का स्थान देशभक्त युवकों का केन्द्र बना रहता था। गुप्तचर पुलिस ने रिपोर्ट दी कि इनके यहां बम बनाए जाते हैं 1615 में आप बन्दी बनाए गए। आपको आजीवन कारावास की सजा देकर अण्डमान भेज दिया गया। वहां इन्हें यातनाएं देते हुए कई कार्य कराए गए।

1607 में पंजाब में हिन्दू महासभा का गठन हुआ। 1615 में भाई परमानन्द ने हरिद्वार अधिवेशन में मदन मोहन मालवीय तथा स्वामी श्रद्धानन्द के साथ अखिल भारत हिन्दू महासभा बनाई। आपके प्रयास से वीर सावरकर 1636–38 के अहमदाबाद अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए। वीर सावरकर ने वहीं घोषणाकर दी कि अब अ.भा. हिन्दू महासभा राजनीतिक दल है। भाई परमानन्द नेशनल असेम्बली के सदस्य चुने गए। आपने दिल्ली से साप्ताहिक हिन्दू का सम्पादन कई वर्षों तक किया। आप हिन्दुओं की दुर्दशा पर एकान्त में रोते थे।

आपने अपनी सम्पत्ति बेचकर 1930–40 में मन्दिर मार्ग नई दिल्ली–110001 में हिन्दू महासभा भवन बनवाया। यहीं अ. भा. हिन्दू महासभा का कार्य किया है। यदि देश विभाजन में आपकी राय मानी जाती तो रावी नदी सीमा रेखा बनती तो लाहोर जैसा अति महत्वपूर्ण नगर भारत में ही रहता।

जब तक नई दिल्ली में हिन्दू महासभा भवन रहेगा।
तब तक देवता स्वरूप भाई परमानंद का नाम रहेगा।।

स्वामी श्रद्धानंद की जीवन झाँकी

23 दिसम्बर 2013 को माता के महान सपूत स्वामी श्रद्धानन्द जी का 88वाँ बलिदान दिवस मनाया जायेगा। 88वर्ष पूर्व भारत माँ के लाडले लाल, हिन्दू समाज के प्रबल संगठनकर्ता एवं महान देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द उपाख्य मुंशीराम का शरीर, मुस्लिम हत्यारे अब्दुल रशीद की गोलियों से छलनी होकर 23 दिसम्बर 1926 को सायंकाल भारत माँ की रक्षार्थ बलिदान हो गया। यह अशुभ दिन भारत के काले इतिहास में सदा अंकित रहेगा। कोई भी स्वाभिमानी इस जघन्य अपराध एवं नृशंस हत्या तथा मुस्लिम समाज के षड्यंत्र को कभी भूल न सकेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म ऐसे समय में हुआ था, जब इस देश के लोग एक ओर अंग्रेजी दासता और अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त थे, तो दूसरी ओर कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों और ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं को बलात् मुसलमान और ईसाई बनाया जा रहा था। हमारे हिन्दू समाज के आचार्य और पंडित उस समय यदि कोई हिन्दू भूलकर भी किसी मुसलमान या ईसाई के घर पानी पी लेता था, अथवा उसकी बहन, बेटियों को बलात मुसलमान बना लेते थे, तो वे पुनः उन्हें हिन्दू समाज में वापिस लेने को तैयार नहीं थे। ठीक ऐसे ही समय पंजाब प्रदेश में जालन्धर के तलवन ग्राम में फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् 1913 फरवरी 1856 को लाला नानकचन्द्र जी क्षत्रिय के घर मुंशीराम का जन्म हुआ।

संक्षिप्त जीवन झाँकी

1– सन् 1859 ई. में तीन वर्ष की अवस्था में बरेली नगर की प्राथमिक पाठशाला में शिक्षा प्रारम्भ।

2 – उसी वर्ष अर्थात् सन् 1859 ई. में ही काशी नगरी में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ।

3 – सन् 1873 ई. में क्वींस कालेज वाराणसी में प्रवेश लिया।

4 – सन् 1877 ई. में जालन्धर के प्रसिद्ध सोंधी परिवार के लाला शालिग्राम की सुपुत्री शिवादेवी के साथ विवाह।

5 – सन् 1884 ई. में सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय के फलस्वरूप आर्यसमाज के सभासद बने।

6 – सन् 1888 ई. में जालन्धर में वकालत आरम्भ की।

7 – सन् 1889 ई. में वैशाखी के दिन सतधर्म प्रचारक उर्दू साप्ताहिक पत्र आरम्भ किया।

8 – सन् 1890 ई. में लाला देवराज से मिलकर कन्या महाविद्यालय की स्थापना की।

9 – सन् 1891 ई. धर्मपत्नी शिवादेवी का निधन हुआ।

10 – सन् 1892 ई. में आर्य प्रतिनिधि पंजाब के प्रधान चुने गये।

11 – सन् 1900 ई. में गुरुकुल की स्थापना के लिये तीस हजार रुपये एकत्रित करने हेतु घर से निकल पड़े।

12 – 1901 ई. में पुत्री अमृतकला की जाति बंधन तोड़कर सुखदेव जी से विवाह कराया।

13 – सन् 1902 ई. में हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम गुरुकुल में आरम्भ किया।

14 – सन् 1904 ई. में 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक – पत्र का हिन्दी में प्रकाशन प्रारम्भ किया।

15 – सन् 1909 ई. में 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के प्रधान चुने गये।

16 – सन् 1911 ई. में कुरुक्षेत्र गुरुकुल की विधिवत स्थापना की।

17 – सन् 1913 ई. में भागलपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान चुने गये।

18 – सन् 1917 ई. में मायापुर वाटिका हरिद्वार में संन्यास आश्रम में प्रवेश करके महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने।

19 – सन् 1919 ई. में 30 मार्च को चाँदनी चौक दिल्ली में गोरों की संगीनों के सामने सीना तानकर खड़े होकर सिंह गर्जना की तथा उसी वर्ष 4 अप्रैल को जामा मस्जिद पर ऐतिहासक भाषण दिया।

20 – दिसम्बर 1919 को कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनाये गये।

21 – सन् 1920 ई. में उन्होंने बर्मा की यात्रा करके आर्य समाज का प्रचार किया तथा उसी वर्ष नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में दलितोद्वार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

22 – सन् 1922 ई. में अकाल तख्त साहिब अमृतसर से भाषण देकर गुरु के बाग के मोर्चा में जेल गये।

23 – सन् 1922 ई. में ही स्वामी श्रद्धानन्द अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

24 – सन् 1924 को महात्मा गांधी के आमंत्रण पर बेलगाँव कांग्रेस के अधिवेशन में दर्शक के रूप में भाग लिया।

25 – सन् 1925 ई. में केरल प्रदेश के वायकम में जाति–पाँति, ऊँच–नीच के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

26 – सन् 1925 ई. में महर्षि दयानन्द जी की जन्म शताब्दी के विशाल कार्यक्रम का नेतृत्व किया।

27 – 23 दिसम्बर 1926 को एक क्रूर मुस्लिम हत्यारे अब्दुल रशीद की गोलियों से वीरगति पाकर रक्तसाक्षी पंडित लेखराम की पंक्ति में सम्मिलित हो गये।

–केशव प्रसाद शुक्ल (करनैलगंज, गोंडा)

कौन था वह?

- जिसे डॉ॰ अंबेडकर ने दलितों का सबसे बड़ा मसीहा कहा–
- जिसने मैकाले की शिक्षा नीति का करारा जवाब दिया–
- जिसे महात्मा गांधी अपना बड़ा भाई कहते थे–
- जिसने चांदनी चौक में संगीनों के सामने सीना खोलकर अंग्रेजी पुलिस को गोली चलाने के लिए ललकारा था—
- जिसे जामा मस्जिद में मिम्बर और स्वर्ण मंदिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ—
- जिसने भारत को लोक अदालतों का विचार दिया—
- जिसने भारतीय स्वामित्व में पहला राष्ट्रीय स्तर का दैनिक अखबार प्रकाशित किया—
- जिसने अमृतसर में जलियावाला बाग काण्ड के बाद कांग्रेस का अधिवेशन करवाने की हिम्मत दिखाई—

वह था

महान् बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

- 20 वीं सदी का चमत्कारी एवं प्रेरक व्यक्तित्व
- देश और धर्म पर बलिदानी
- निर्भीक संपादक
- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संस्थापक
- सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक
- अपने समय का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, दिल्ली का बेताज बादशाह
- शुद्धि अभियान का प्रणेता
- महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी
- लोक कल्याण के लिए अपनी सारी सम्पत्ति दान कर देने वाला सर्वत्यागी संन्यासी सत्य से परे कोई धर्म नहीं।

धर्म की नींव ही सत्य है।

उच्च से उच्च मस्तिष्क संसार के नाश का कारण है,

यदि उसके साथ पवित्र आत्मा सम्मिलित नहीं है।

जो स्वयं भोगी है वे दूसरे को त्याग कैसे सिखलायेंगे?

इसी जन्म भूमि के लिए कष्ट सहना, इसी की सेवा में सारा पुरुषार्थ लगाना और इसी पर सर्वस्व न्यौछावर करना एक–एक भारतवासी अपना धर्म समझ लें।

मैं आप सभी देशवासियों से याचना करूँगा कि अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि आज से ये करोड़ों दलित हमारे लिए अछूत नहीं हैं, बल्कि हमारे ही भाई बहन हैं।

मैं स्वयं कमजोर, रोगी और वृद्ध होते हुए भी सारे देश में घूमने जाऊंगा, दलित भाइयों का संगठन करूँगा।

जिस देश और जाति में शिक्षक स्वयं चरित्रवान न हों, उसकी दशा कभी सुधर नहीं सकती।

तुम्हारा ज्ञान निष्फल है, यदि तुम उस पर आचरण नहीं करते।

आर्य महिला आश्रम में आकर मेरा हृदय प्रसन्न हुआ।

(पूर्व उप प्रधानमंत्री, श्री लाल कृष्ण आडवानी)

आर्य महिला आश्रम न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली में स्थित दिनांक 27.11.2017 को स्वर्गीया श्रीमती कमला अडवाणी जी की पावन जन्म स्मृति पर आश्रम की महिलाओं को वस्त्र वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में उनकी सुपुत्री श्रीमती प्रतिभा अडवाणी जी, उनके सुपुत्र श्री जयन्त, पुत्र वधू श्रीमती गीतिका उनके भाई तथा अडवाणी जी के निजी सचिव श्री दीपक चोपड़ा जी ने भी सहयोग दिया।

इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने श्रीमती कमला अडवाणी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। डॉ. देवेश शास्त्री जी ने स्वागत सम्मान किया। आर्य समाज राजेन्द्र नगर के प्रधान श्री अशोक सहगल, श्री नरेन्द्र वलेचा, श्री सतीश मैहता जी की उपस्थिति में आश्रम की प्रधाना श्रीमती आदर्श सहगल जी ने अध्यक्षीय स्वागत भाषण पढ़ा। मंत्राणी श्रीमती जगदीश वधवा जी के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् कार्यक्रम समाप्न हुआ।

मालवीयजी के जीवन से सम्बन्धित मुख्य तिथियों की सूची

25 दिसम्बर सन् 1861 – प्रयाग में मदन मोहन मालवीय का जन्म
सन् 1878 – कुन्दन देवीजी से मालवीयजी का विवाह
सन् 1884 – कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. परीक्षा में मालवीयजी उत्तीर्ण
जुलाई सन् 1884 – इलाहाबाद जिला स्कूल में अध्यापक
दिसम्बर सन् 1885 – मध्यभारत हिन्दू समाज के समारोह के आयोजन में मालवीयजी का सक्रिय सहयोग
जुलाई सन् 1887 – कालाकांकर में 'हिन्दूस्थान' पत्र का सम्पादन कार्य प्रारम्भ
सन् 1889 – हिन्दूस्थान पत्र का सम्पादन छोड़कर प्रयाग में वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ
दिसम्बर सन् 1893 – मालवीयजी का प्रयाग हाईकोर्ट में वकालत करना
सन् 1902–1903 – मालवीयजी के प्रयास से प्रयाग में हिन्दू बोर्डिंग हाउस का निर्माण
सन् 1903–1912 – प्रान्तीय कौंसिल की सदस्यता–मालवीजयी द्वारा कौंसिल में प्रान्त की महत्त्वपूर्ण सेवा
सन् 1904 – काशीनरेश प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में वाराणसी में मालवीयजी का विश्वविद्यालय की स्थापना पर भाषण
जनवरी सन् 1906 – कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में मालवीय जी द्वारा आयोजित सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन। उदार सनातन धर्म का प्रचार। काशी में भारतीय विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय
सन् 1907 – मालवीयजी के सम्पादकत्व में "अभ्युदय" का प्रकाशन, लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों और उदार हिन्दू धर्म का प्रसार।
अक्तूबर सन् 1910 – हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में मालवीयजी का अध्यक्षीय भाषण
11 अक्तूबर सन् 1911 – काशी विश्वविद्यालय की योजना के सम्बन्ध में मालवीयजी और महाराजा दरभंगा की लार्ड हारडिंग से भेंट, लार्ड हारडिंग का प्रोत्साहन
28 नवम्बर सन् 1911 – हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसाइटी का गठन
अक्तूबर सन् 1915 – बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी बिल पारित
फरवरी सन् 1916 – बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी का शिलान्यास
दिसम्बर सन् 1916 – कांग्रेस–लीग सुधार योजना
20 अगस्त सन् 1917 – भावी राजनीतिक लक्ष्य के सम्बन्ध में भारत मंत्री की घोषणा
29–31 अगस्त सन् 1918 – बम्बई में कांग्रेस का विशेष अधिवेश, गरम दल और नरम दल में सहयोग बनाये रखने के लिए मालवीयजी का प्रयत्न
दिसम्बर सन् 1918 – मालवीयजी की अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन
जुलाई–दिसम्बर 1919 – पंजाब में पीड़ित जनता की सहायता
नवम्बर सन् 1919 – मालवीयजी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के उप–कुलपति।
16 सितम्बर सन् 1922 – लाहौर में मालवीयजी का हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द पर भाषण
31 दिसम्बर सन् 1922 – मालवीयजी की अध्यक्षता में गया में हिन्दू महासभा का विशेष अधिवेशन
अगस्त सन् 1923 – मालवीयजी की अध्यक्षता में काशी में हिन्दू महासभा का अधिवेशन।
अगस्त सन् 1926 – मालवीयजी और लाजपतराय के नेतृत्व में कांग्रेस इंडिपेंडेंट पार्टी का गठन
नवम्बर सन् 1926 – साइमन कमीशन की नियुक्ति। मालीवीयजी आदि नेताओं द्वारा उसके बहिष्कार की घोषणा।
दिसम्बर सन् 1929 – काशी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मालवीयजी का दीक्षान्त भाषण।
20 अगस्त सन् 1930 – दिल्ली में मालवीयजी और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी, छः मास की सजा
अगस्त सन् 1934 – कांग्रेस वर्किंग कमेटी द्वारा निर्णय कि वह साम्प्रदायिक निर्णक को न स्वीकार करती है और न उसे रद्द करती है। मालवीयजी और अणे का विरोध और इस्तीफे
अक्तूबर सन् 1934 – बम्बई में कोंग्रेस का अधिवेशन, साम्प्रदायिक निर्णय के सम्बन्ध में मालवीयजी का संशोधन नामंजूर
फरवरी सन् 1935 – मालवीयजी द्वारा आयोजित दिल्ली में साम्प्रदायिक निर्णय विरोधी कान्फरेन्स
जनवरी सन् 1936 – प्रयाग में मालवीयजी के नेतृत्व में सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन, अन्त्यजोद्धार पर प्रस्ताव
सितम्बर 1939 – मालवीयजी का त्यागपत्र और उनके प्रस्ताव पर सर राधाकृष्णन् हिन्दू यूनिवर्सिटी के उपकुलपति
सन् 1941 – गोरक्षा मंडल की स्थापना
12 नवम्बर सन् 1946 – मालवीयजी का निधन

– नरेन्द्र वलेचा जी
प्रधान, शुद्धि सभा

माह नवम्बर 2017 के आर्थिक सहयोगी

श्री महक व ध्रुव नारंग जी, आनन्द निकेतन, नई दिल्ली		3000/–
श्री चन्द्रकान्ता राजेश्वर धर्मार्थ ट्रस्ट, साउथ एक्स. नई दिल्ली		2100/–
श्री ओम वीर सिंह जी, विपिन गार्डन, , नई दिल्ली	आ. सदस्यता शुल्क	2100/–
आ. विद्याप्रसाद मिश्र जी, धर्मा. आर्य समाज साउथ एक्स.	आ. सदस्यता शुल्क	2100/–
ला. ओम प्रकाश अग्रवाल जी, नागलोई, नई दिल्ली	आ. सदस्यता शुल्क	2100/–
श्री स्वदेश गुप्ता जी, लाजपत नगर–1, नई दिल्ली	आ. सदस्यता शुल्क	2100/–
आर्य स्त्री समाज, अशोक विहार फेज–1, दिल्ली		1000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद,	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगंलौर (कर्नाटक)	मासिक	750/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा दिल्ली	मासिक	500/–
श्री आशीष किंगर जी, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली		500/–
श्री शिव कुमार मदान जी ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	200/–
श्रीमती मीना लोधी जी, अणु विहार, नरौरा, बुलन्दशहर		200/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	500/–
श्रीमती संतोष वहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
मास्टर अर्पण हंस, (नाती–श्रीमती नीलम खुराना जी), न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
बेबी स्वस्ति आर्या सुपुत्री डा. देवेश प्रकाश जी, आर्य महिला आश्रम	मासिक	100/–
श्रीमती कैथरिन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती कमला डाबर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	द्वि मासिक	200/–
श्रीमती ज्ञान देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	द्वि मासिक	200/–
श्रीमती अविनाश जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती चौधरी जी, सुपुत्र श्रीमती वास्नती चौधरी जी (जन्म दिन पर)		100/–
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/–
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती नीरजा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/–

श्री वी. के. गुप्ता जी डी.डी.ए. फ्लैट मुनिरिका द्वारा

श्री अरुण कुमार कन्सल जी, शिवालिक, नई दिल्ली	आजीवन शुल्क	500/–
श्रीमती स्नेहलता गुप्ता जी, डी.डी.ए फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		100/–
श्री पीयूष गुप्ता जी, डी.डी.ए फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती अमीता गुप्ता जी, डी.डी.ए फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		100/–
कु. रिद्धि गुप्ता, डी.डी.ए फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		100/–
कु. इशीता गुप्ता, डी.डी.ए फ्लैट, मुनिरिका, नई दिल्ली		100/–

मनीषीवृन्द !

मेरी अन्तर्वेदना की पुकार है विश्व की प्रथम आर्यसमाज की दशा व दिशा। मेरी पीड़ा यह है कि जो विश्व की प्रथम आर्यसमाज है काकड़वाड़ी, उसकी ओर किसी विद्वान्, मनीषी, चिन्तक व विचारक का ध्यान नहीं है। यह वह आर्यसमाज है आर्यबन्धुओ ! जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द के करकमलों द्वारा की गयी थी। आप सभी को यह सम्यक् प्रकार से विदित है कि यह आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित प्रथम आर्यसमाज है, अतः इस धरोहर को संवारके रखना हम सभी आर्यों का प्रमुख उद्देश्य है। क्योंकि आप सभी इस बात से भली–भाँति परिचित हैं कि देशभर में जगह–जगह भव्य आर्य समाजें बनी हुई हैं, किन्तु काकड़वाड़ी, मुम्बई–4 आर्यसमाज का ऐसा भव्य स्वरूप दिखाई नहीं देता। अतः आवश्यक है कि हम सब मिलकर एक झण्डे के नीचे आयें और विश्व की प्रथम आर्यसमाज व महर्षि की इस धरोहर को एक नया स्वरूप प्रदान करें। क्योंकि इसकी भव्यता आर्यसमाज व महर्षि का गौरव है एतदर्थ इसका नवनिर्माण अत्यन्त आवश्यक है।

– प्रमोद शुक्ला
47, नुल बाजार मार्किट, मुम्बई, मो. 08097392047

शोक समाचार

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी का दुखद निधन 14 नवम्बर 2017 रात्री करीब एक बजे हदयाघात से देहीवसान हो गया। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा एवं शुद्धि समाचार परिवार की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-12-2017 Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
(pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

, नई दिल्ली-

शुद्धि समाचार

दिसम्बर - 2017

शुद्धि आन्दोलन के पुरोधा

स्वामी श्रद्धानन्द

-डॉ. महेश विद्यालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द ऋषि दयानन्द के सच्चे अर्थों में उत्तराधिकारी थे। ऋषि के जो आदर्श मन्तव्य, चिन्तन और धारणाएं थीं उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने क्रियात्मक साकार रूप दिया। अपने गुरु के प्रति स्वामी श्रद्धानन्द जी की निष्ठा, लगन एवं समर्पण प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय था। स्वामी जी का धर्म-शिक्षा, राजनीति, समाज सेवा आदि प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने दलितोद्धार एवं शुद्धि आन्दोलन को जो बल, प्रेरणा, भावना और महत्व दिया वह उल्लेखनीय व स्मरणीय है। स्वयं स्वामी जी ने रायसाहब शारदा जी से कहा था-'मैंने शेष जीवन के लिए अन्तिम प्रोग्राम अछूतोद्धार शुद्धि और संगठन ही निश्चय किया है। इसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती है। उनके द्वारा संचालित शुद्धि यज्ञ का चक्र देश के कोने-कोने में तेजी से चला। जो जन स्वधर्म, स्वदेश, स्वभाषा एवं एक संस्कृति से विमुख हो रहे थे, उन्हें स्वामी जी ने पुनः शुद्धि द्वारा गले लगाया। ये अज्ञान, भ्रम, लोभ, लालच तथा बहकाने से स्व स्वरूप को [illegible] चुके थे। इनके लिए वैदिक चिन्त[illegible]ार खुले हैं। इनसे घृणा, द्वेष मत करो। ये दया और सहानुभूति के पात्र हैं। ये हमारे भूले-भटके, हमारे ही भाई बहन हैं। इन्हें शुद्धि के द्वारा पुनः नवजीवन की प्रेरणा देनी है। तभी हमारे यह नारे कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वा आशा मम मित्रं 'भवन्तु' पूरे होंगे। हम सब एक पिता प्रभु की सन्तान हैं। हमारा पालन-पोषण, प्रकृति प्रदत्त साधन, जलवायु, अग्नि, तेज, प्रकाश, वनस्पति, खानपान समान हैं फिर परस्पर भेद कैसा? ऊंच-नीच, भेद भाव क्यों? मानव मानव के बीच दीवार कैसी? मनुष्य का पशुओं से भी निकृष्ट क्यों समझा जाता है?

क्यों नहीं उसे तो पतित हो गया, दलित बना गया, विधर्मी होकर जी रहा है, उसे ऊपर उठाने का अवसर दिया जाता है। यह वेदना स्वामी श्रद्धानन्द को निरन्तर सताती रहती थी। वे निरन्तर शुद्धि आन्दोलन को व्यापक, व्यावहारिक और गतिशील बनाने के लिए अधीर, आकुल व दीवाने रहते थे। उन्हें मारने की कई बार धमकियां मिल चुकी थीं। उनके इस शुद्धि व दलितोद्धारक चिन्तन एवं आन्दोलन से तत्कालीन बड़े-बड़े राजनेता, देश के तथाकथित धर्माचार्य, असन्तुष्ट तथा

नाराज रहते थे। किन्तु धुन के धनी, संकल्पी, प्रभु भक्त, निर्भीक स्वामी श्रद्धानन्द अपने शुद्धि अभियान को निरन्तर आगे बढ़ाते रहे। यहां तक कि उन्हें अपने प्राण भी इसी शुद्धि महायज्ञ में आहुत करने पड़े। किन्तु वे अमृतपुत्र होकर जीए। उन्हें मृत्यु सत्पथ से विचलित नहीं कर सकी। वे किसी विधर्मी के भय, डर से भयभीत नहीं हुए। उनका तो यही नारा और सन्देश था-

दलित आ जा, पतित आ जा, तृषित आ जा मिल न पाया, जिनको प्यार, उनको प्यार देना है।

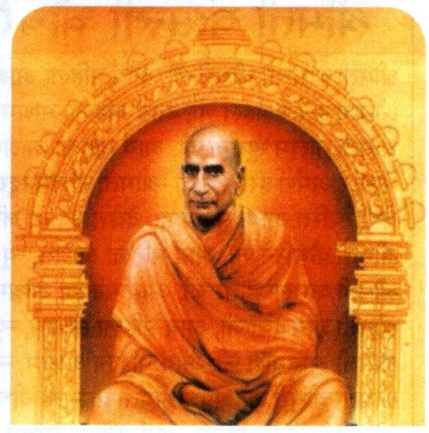

उनके हृदय में दीनों-हीनों, पतितों, दलितों आदि के लिए अपार प्रेम, दया, करुणा थी। वे शुद्ध हृदय से मुसलमानों, ईसाइयों को गले लगाकर उन्हें आर्य धर्म में दीक्षित करना चाहते थे। यही उनकी अन्तिम इच्छा थी जैसा कि उन्होंने अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द से पत्र लिखवाया था, उसमें चर्चा की है।थे। यही उनकी अन्तिम इच्छा थी जैसा कि उन्होंने अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द से पत्र लिखवाया था, उसमें चर्चा की है।

"मेरा यह शरीर इस योग्य नहीं रहा कि जिससे कोई काम ले सकूं। इसलिए अब तो मेरी यह कामना है कि इस पुराने शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करूं और फिर भारत में आकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति की सेवा करूं।"

आज की परिस्थिति, सन्दर्भ, हालात और विचार सभी तेजी से परिवर्तित हुए हैं और हो रहे हैं। इस बदलाव और भटकाव में आर्यसमाज के लोग भी मूल ध्येय से हटते हिलते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हमारे संगठन, मन्दिर, संस्कार, परिवार एवं व्यक्ति दयानन्द, श्रद्धानन्द और आर्यसमाज के उद्देश्यों के अनुकूल नहीं बन पा रहे हैं? यह प्रश्न चिह्न सर्वत्र चर्चा का विषय है। इस प्रसंग में स्वामी श्रद्धानन्द का अमर स्मारक गुरुकुल कांगड़ी का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। जो संस्था संसार को धर्मचरित्र, जीवन, नैतिकता, सदाचार एवं आध्यात्मिकता का सन्देश दे सकती थी वह अपने में एक समस्या बन रही है। अधिक विवेचन अपेक्षित नहीं है। ऐसी विकट स्थिति में जबकि राष्ट्र धार्मिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक, वैयक्तिक, शैक्षणिक प्रत्येक दृष्टि से दिशाहीन एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ की हालात से गुजर रहा है। यदि आर्य समाज अपनी अस्मिता स्वरूप, धैर्य, चिन्तन एवं आदिम धरोहर को जाने, माने और पहचाने तो राष्ट्र को दिशा और मोड़ दे सकता है। यह तभी सम्भव है जब हम आर्यसमाज दयानन्द, श्रद्धानन्द और हंसराज के अनुयायी, ईसाई मुसलमानों की शुद्धि से पहले अपनी आत्मशुद्धि का व्रत व संकल्प लें। आत्मनिरीक्षण करें। इन दोषों को मजबूती से पकड़ें। प्रेरक महापुरुषों के व्यक्तित्व और कृतित्व से सेवा, त्याग, उपकार, विनम्रता का पाठ पढ़ें। संगठन, संस्था, मन्दिर एवं समाजों में मात्र सेवा, त्याग को महत्त्व दिया जाए। धन बल, जनबल, संगठन बल स्वतः खिंचा चला आएगा। आज आर्यसमाज को प्रेरक, आदर्श, धर्मवान, चरित्रवान, त्यागी, सेवा भावी लोगों की बड़ी आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द का यह वाक्य बड़ा ही सटीक एवं मजबूत है।

आज आर्यसमाज को नेताओं की नहीं, सेवकों की जरुरत है। कैसी विचित्र विडम्बना है कि इतने स्कूल, कॉलेज, गुरुकुल, संगठन, आश्रम हैं, किन्तु एक भी हंसराज, श्रद्धानन्द, गुरुदत्त, लेखराम, दर्शनानन्द नहीं बन सका? सोचो, विचारो और सच्चे अर्थ में आर्यत्व के गुण, कर्म, स्वभाव को लाने का संकल्प करो। **स्वामी श्रद्धानन्द जैसा अद्भुत चरित्र हमारी धरोहर है, इतना गिरकर, इतना ऊपर उठ सकता है मानव, यह प्रेरणा स्वामीजी का जीवन पुकार-पुकार कर दे रहा है।** स्वामी श्रद्धानन्द का स्वप्न अधूरा है। उनकी अन्तिम इच्छा भटका रही है। बलिदान दिवस हर वर्ष मनाते हैं। किन्तु, परन्तु, लेकिन-कुछ सीख नहीं ले पाते हैं? यही कमी है। उनके शुद्धि आन्दोलन को तन, मन, धन से आगे बढ़ाना है। मानवता, प्रेम, दया, करुणा सहानुभूति के व्यवहार से सबको अपना बनाना है। जो विधर्मी हमारे भाई बहनों को लोभ लालच, बलात्, वर्ग भेद, जाति भेद, भाषा, सेवा प्रेम इत्यादि के नाम पर हम से अलग कर रहे हैं उनके पास जाना होगा। उन्हें अपनाना होगा। आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई इस जटिल कार्य को नहीं कर सकता है। यही स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम इच्छा थी। **"देखो मैं रहूं या न रहूं, किन्तु मेरे बाद शुद्धि का काम बन्द न होने पाए।"**

शुद्धि सभा के पूर्व प्रधान, हमारे पथ प्रदर्शक

स्व. द्वारकानाथ जी सहगल पुण्य तिथि पर शत्-शत् नमन

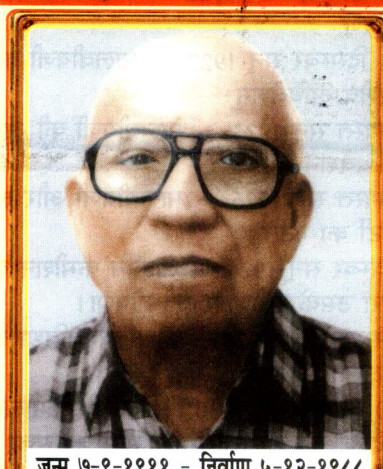

जन्म ७-९-१९११ - निर्वाण ५-१२-१९८८

वैदिक धर्म के लिए पूर्णतया समर्पित, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, भारतीय संस्कृति सभ्यता के पोषक स्वनामधन्य स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल के जन्म दिवस 7 सितम्बर को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा तथा आर्य समाज राजेन्द्र नगर उनकी पावन स्मृति को सश्रद्ध नमन करती है।

मुद्रक, व प्रकाशक - रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिन्टर्स 2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-5, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : भारद्वाज पाण्डेय, सह. सम्पादकः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री